

Vol - 08 / September 2020

ISSN 2395-051X

Research Times

A Peer Reviewed Research Journal
(Published under RUSA Plan of M.P. Govt.)

Patron

Dr. B.D. Ahirwar

Editor

Dr. Rashmi Dubey



Re Accredited By NAAC "A"
Government Autonomous Girls
Post Graduate College of Excellence,
Sagar (M.P.)

अज्ञात मित्र

ISSN 2395-051X

Research Times

A Peer Reviewed Research Journal

(Published under RUSA Plan of M.P. Government)

Patron

Dr. B.D. Ahirwar

Editor

Dr. Rashmi Dubey

Govt. Auto. Girls PG College of Excellence

SAGAR - 470 001 (M.P.) India

15.	बाजार तंत्र-प्राचीन से नवीन डॉ. अंजना चतुर्वेदी	66
16.	नृत्य में धुँधरू का महत्व डॉ. अपर्णा चाचौदिया	70
17.	समकालीन नवगीतों में लोक-जीवन डॉ. भेरूलाल मालवीय	74
18.	संस्मरणों के रेखाचित्रकार आचार्य विनय मोहन शर्मा डॉ. सुजाता मिश्र	81
19.	नयी कविता का शिल्प डॉ. नरेन्द्र सिंह	87
20.	लोक साहित्य में जीवन सत्य डॉ. सरिता जैन	91
21.	कोविड-19, श्रम पलायन एवं कानून (एक समीक्षात्मक अध्ययन) डॉ. आनंद तिवारी	94
22.	भारत में ई कामर्स व्यवसाय विकास एवं वर्तमान स्थिति डॉ.एम.एम.चौकसे	99
23.	New Approaches in the Oral Traditions of History Dr. Naveen Gideon	104
24.	Symbol-worship in Ancient India : An Introduction Dr. Ashish Kumar Chachondia	110
25.	How Stress Hurts and How to Overcome it Dr. Rekha Baxy	116
26.	Study of Personality Traits: With special reference to Athlete Dr. Monika Hardikar	120
27.	Culture: Nature and Significance Nisha Indra Guru	129
28.	Prospects And Opportunities In Retail Sector Dr.D.K. Gupta	133
29.	Anti Bacterial Study of Some Plant Seeds Dr. Varsha Dubey	139

संस्मरणों के रेखाचित्रकार आचार्य विनय मोहन शर्मा

डॉ. सुजाता मिश्र

अतिथि व्याख्याता (हिंदी)

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर (मध्यप्रदेश)

श्रीराम गीत से।

सारांश :-

रेखाचित्र भावप्रधान स्वरूप की एक आधुनिकतम गद्य विधा है। इसे कहानी और निबंध के मिले-जुले स्वरूप के तौर पर भी देखा जा सकता है जिस प्रकार चित्रकार कुछ रेखाओं के गिने-चुने उभारों से अपने अंतर्मन की भावनाएं प्रकट करता है, उसी प्रकार रेखाचित्रकार शब्दों के माध्यम से एक प्रकार का रेखा-रंग रहित चित्र-सा प्रस्तुत करता है। जिसको पढ़ते हुए पाठक को ऐसा प्रतीत होता है मानों वह सम्बंधित व्यक्ति से स्वयं रुबरु हो रहा हो। आचार्य विनय मोहन शर्मा हिंदी साहित्य के आधुनिक काल की एक उल्लेखनीय प्रतिभा हैं। ऋषितुल्य व्यक्तित्व के धनी, पठन - पाठन में निरंतर लिप्त रहने वाले विनय मोहन शर्मा नितांत सहज तथा निराभिमानी थे। अपने लेखकीय उत्तरदायित्वों के प्रति सजग, निस्वार्थ भाव से साहित्य सृजन करने वाले विनय मोहन शर्मा का व्यक्तित्व उनके कृतित्व रूप को और भी ऊंचाईयां प्रदान करता था। देखा जाये तो साहित्य के तमाम प्रचलित वाद - प्रतिवादों में आचार्य विनय मोहन शर्मा की स्थिति एक मध्यमार्गीय सी नजर आती है।

मुख्य-शब्द - रेखा चित्र, चित्रकला, संस्मरण, अतीत, स्मृतियां।

'रेखाचित्र किसी व्यक्ति, वस्तु, घटना या भाव का कम से कम शब्दों में मर्मस्पर्शी, भावपूर्ण एवं सजीव अंकन है।' डॉ. नगेंद्र के अनुसार 'जब चित्रकला का यह शब्द साहित्य में आया तो इसकी परिभाषा भी सम्भवतः इसके साथ आयी। अर्थात् रेखाचित्र एक ऐसी रचना के लिये प्रयुक्त होने लगा जिसमें रेखायें हो पर मूर्त रूप अर्थात् उतार-चढ़ाव आदि न हो, तथ्य का उद्घाटन मात्र हो।'

डॉ. भगीरथ मिश्र के अनुसार 'अपने सम्पर्क में आये किसी विलक्षण व्यक्तित्व अथवा संवेदना को जगाने वाली सामान्य विशेषताओं से युक्त किसी प्रतिनिधि चरित्र के मर्मस्पर्शी स्वरूप को देखी - सुनी या संकलित घटनाओं की पृष्ठभूमि में इस प्रकार उभार कर रखना कि उसका हमारे हृदय में एक निश्चित प्रभाव अंकित हो जाये, रेखाचित्र या शब्दचित्र कहलाता है।'

आचार्य विनय मोहन शर्मा हिंदी साहित्य के आधुनिक काल की एक उल्लेखनीय प्रतिभा हैं। ऋषितुल्य व्यक्तित्व के धनी, पठन-पाठन में निरंतर लिप्त रहने वाले विनय मोहन शर्मा नितांत सहज तथा निराभिमानी थे। अपने लेखकीय उत्तरदायित्वों के प्रति सजग, निस्वार्थ भाव से साहित्य सृजन करने वाले विनय मोहन शर्मा का व्यक्तित्व उनके

कृतित्व रूप को और भी ऊँचाईयां प्रदान करता था। देखा जाये तो साहित्य के तमाम प्रचलित वाद - प्रतिवादों में आचार्य विनय मोहन शर्मा की स्थिति एक मध्यमार्गीय सी नजर आती हैं।

मध्यप्रदेश का नरसिंहपुर जिला अपनी उर्वरा भूमि और सांस्कृतिक परम्परा के साथ भारतीय संस्कृति की चेतना से सम्पन्न एक सहज इकाई रहा है। नरसिंहपुर का नाम भगवान नृसिंह के भव्य मंदिर के नाम पर पड़ा है। यह क्षेत्र प्राचीनकाल से ही विद्वानों, वीरों, राजर्षियों तथा सम्पन्न जनों का क्षेत्र रहा है। यह चेदि राज्य का अंग भी रहा है। कला एवं संस्कृति के ऐसे ही समृद्ध परिवेश में 16 अक्टूबर 1905 ई. के दिन नरसिंहपुर जिले के 'करकबेल' नामक गाँव में शुक्रदेव प्रसाद तिवारी (आचार्य विनय मोहन शर्मा) का जन्म हुआ। सादगी, शालीनता, सौम्यता और सहृदयता उन्हें संस्कार के रूप में मिले, जिसने उनके व्यक्तित्व में एक ऐसा अजातशत्रु रचा कि वह उनकी पहचान हो गया। शिक्षा के क्षेत्र में एम. ए., पीएच.डी., एल.एल.बी. उनकी उस काल की उपलब्धियाँ हैं, जब उच्च शिक्षा की संभावनाओं का रास्ता किसी भी गाँव में जन्में और कस्बे में पले-बड़े प्रतिभावान व्यक्ति के लिए कठिन होता था।

आचार्य विनय मोहन शर्मा के कृतित्व की विकास यात्रा के कई चरण हैं। साहित्य की अनेक विधाओं में उनकी रचना कौशल परिव्याप्त है। किशोरावस्था से आरम्भ हुआ उनका रचना कार्य आयु के साथ विस्तृत होता गया। आधुनिक हिंदी साहित्य जगत में आचार्य जी विशेषतः अपने रेखाचित्रों के कारण जाने जाते हैं। ज्यादातर संस्मरणात्मक रेखाचित्र लिखे हैं, ये सभी उनके तीन रेखाचित्र संग्रहों में संकलित हैं-

1. रेखा और रंग
2. वे दिन वे लोग
3. अतीत की स्मृतियाँ

1. रेखा और रंग - 'रेखा और रंग' आचार्य जी द्वारा लिखे गये रेखाचित्रों का पहला संकलन है। जिसका प्रकाशन 1954 में शिवलाल अग्रवाल एंड कम्पनी द्वारा किया गया है। इसकी भूमिका में आचार्य जी लिखते हैं - 'ललित वाङ्मय के अन्तर्गत जो नूतन विधायें आविर्भूत हुई हैं उनमें रेखाचित्र का विशिष्ट स्थान है। किसी निश्चित प्रवृत्ति को रेखाचित्र कहना कठिन है क्योंकि वह कथा न होकर भी कथा सी लगती है, संस्मरण ना होकर भी संस्मरण का भाव कराती है और जीवनी न होकर भी जीवन की झलक प्रस्तुत करती है। वास्तव में यह विधा इन सभी का समन्वित रूप है।'

'रेखा और रंग' में कुल मिलाकर 14 रेखाचित्र हैं। संग्रह के अधिकांश रेखाचित्र आचार्य जी के आत्मीयजनों से सम्बंधित हैं। संग्रह का पहला रेखाचित्र है 'डबली बाबू' जो साहित्य जगत में काफी लोकप्रिय हुआ था तथा जिसने रेखाचित्रकार के रूप में सबका ध्यान विनय मोहन शर्मा की ओर खींचा था। वरिष्ठजनों और गुरुजनों से सुनकर पता चलता है कि संग्रह में चित्रित डबली बाबू, नजर नसाय गयी के शंकर, कन्हैया, बदलू धोबी और वंशी अहीर जैसे पात्र सचमुच होते थे। हमें तो ऐसे पात्रों के विषय में पढ़कर ही कौतूहल और विस्मय होता है। 'डबली बाबू' में कितनी उच्च नैतिकता का बोध था, और उस नैतिक आचरण से भरपूर परिवारों की स्वयं की आत्मछवि घोर अभाव के बीच भी कैसी गरिमामय और आत्मगौरव से सम्पन्न होती थी, यह इस रेखाचित्र को पढ़ते हुए उभर आता है। डबली बाबू एक वास्तविक पात्र होकर भी सुदूर अतीत के पौराणिक पात्र की तरह नजर आते हैं। उनके शारीरिक गठन का

अनावशाली और मनोरंजक चित्रण करते हुए लेखक की भाषा सधी हुई और सहज है- 'उनका कद न ऊंचा, न ठिगना, सने के मझोल आदमी हैं। कपोलो में धंसी हुई पीली-पीली सी दंत विरल है। उनका कथई रंग पान और तम्बाकू के अतिरेक की शहादत दे रहा है। धोती बाबुआना ढंग की पहने हुए हैं, पर मैल खाने से बादामी रंगी हो गयी है। पैरों में कोंकणी चप्पल है, जो काफी मोटी और मजबूत है और हों काले धारीधार कुर्ते के ऊपर बटन - विहीन खाकी स्ल का कोट भी पहने हुए हैं।'

इसी संग्रह का दूसरा महत्वपूर्ण रेखाचित्र है 'नजर तो नसाय गयी मालिक' जिसमें लेखक का घरेलू सहायक 'शंकर' एक समर्पित, विश्वसनीय सेवक के रूप में सामने आता है। उसकी नैतिक निष्ठा का स्तर यह है कि केवल एक बार जरूरत पड़ने पर उसने घर से एक रुपये का सिक्का चुपचाप उठा लिया तो थोड़े समय बाद स्वयं ग्लानि से भर गया। आगे से जाकर मालिक के समक्ष अपनी गलती बताकर माफी मांगी, किंतु मालिक के माफ कर देने के बाद भी शंकर स्वयं को माफ न कर सका। अंत में उसने रोते हुए नौकरी छोड़ दी और मालिक से कहा 'नजर तो नसाय गयी मालिक।'

इस रेखाचित्र संकलन में दो और भी अनूठे पात्र हैं- 'वकील साहब' और 'जग्गू काका'। जग्गू काका कजलिया लगाते हैं और भूत - प्रेत उतारते हैं। अंधविश्वासों से भरी इस ओझागिरी का भी लेखक ने रस ले - लेकर सजीव चित्रण किया है। 'वह वृक्ष और वह चिड़िया' तथा 'इला' काव्यात्मकता से भरपूर रेखाचित्र है। इला में मूर्ति के माध्यम से लेखक ने सौंदर्य शास्त्र की विवेचना ही कर डाली है 'पूर्णता किसी वस्तु में नहीं दृष्टा की आंखों में होती है। बुद्धि की आंखों से हृदय नहीं देखा जाता।'

जिन पेड़ों पर पंछी अपना ठिकाना बनाते हैं उन पेड़ों का भी पंछियों से कैसा गहरा रिश्ता बन जाता होगा कि शाम ढलते ही पेड़ इंतजार सा करते होंगे पंछी के लौट आने का। इसी भाव कि बहुत मार्मिक अभिव्यक्ति मिलती है 'वह वृक्ष और वह चिड़िया' में, सूने मैदान के बीच खड़ा वृक्ष एक चिड़िया के बस जानें से बसंती शोभा पाकर लहलहा उठा। किंतु एक दिन वह चिड़िया अन्य साथी चिड़ियों के साथ उड़कर जो गयी तो फिर कभी नहीं लौटी। लेखक लिखते हैं 'तरु की सारी कोमलता का मानों उसके पास कोई मूल्य ही न रहा हो। वह (तरु) अब भी आकाश की ओर चहचहाहट सुनकर आँखें फैला देता है, पर वह पक्षी दिखाई नहीं देता। लोग कहते हैं 'मालूम होता है, उस बेवफा पक्षी की याद में यह वृक्ष रात-रात भर आंसू बहाया करता है।'

इस प्रकार हम देखते हैं कि आचार्य जी ने 'रेखा और रंग' में समाहित सभी रेखाचित्रों की विषय वस्तु का वर्णन अत्यन्त कुशलता के साथ किया है। नैतिकता, आत्मीयता, उदारता, कर्तव्यनिष्ठा, देशभक्ति, स्वार्थपरता आदिगुणों - दुर्गुणों का अंकन उन्होंने खूबसूरती के साथ किया है।

2. वे दिन, वे लोग - 'वे दिन, वे लोग' का प्रकाशन मध्यप्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन द्वारा वर्ष 1980 में किया गया था। इसमें आचार्य जी द्वारा अपने समय के 22 साहित्यकारों के विषय में संस्मरणात्मक रेखाचित्र लिखे गये हैं, जिनमें अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' से लेकर अनंत गोपाल शेवडे तक अनेक प्रसिद्ध कवि और लेखक शामिल हैं। संकलन का पहला संस्मरण है 'वह मेरा प्राण प्यारा कहां है? हरिऔध' जिसमें उन्होंने हरिऔध जी के प्राध्यापक रूप का प्रभावपूर्ण चित्रण किया है। वे बताते हैं कि काशी हिंदू विश्वविद्यालय से बीए करते हुए उन्हें हरिऔध जी

से विनय पत्रिका पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। हरिऔध जी पैंतालीस मिनट के एक पीरियड में एक ही विनय पढ़ाते थे। भावार्थ बताने के साथ ही साथ वे उसके काव्य सौंदर्य का विश्लेषण विस्तार से करते जिससे कि छात्रों का कवि के साथ तादात्म्य स्थापित हो जाता। अपने समय की राष्ट्रीय गतिविधियों का भी वे विवेचनात्मक उल्लेख अवश्य करते। भारतीय संस्कृति, मुख्यतः हिंदू संस्कृति पर वे इसी के साथ-साथ प्रकाश डालते चलते हैं।

सुखराम चौबे 'गुणाकार' सागर मध्यप्रदेश के एक प्रमुख हास्य कवि थे। विनय मोहन जी ने उनकी प्रतिभा का जीवंत वर्णन किया है और साथ ही उनके पद्य और गद्य दोनों के कुछ उद्धरण देकर उनके गुण दर्शाये हैं। देवरी जिला सागर के ही एक अन्य कवि सैयद अमीर अली मीर का अत्यंत भावपूर्ण चित्रण भी आचार्य जी ने इसी पुस्तक में किया है। आचार्य जी बताते हैं कि सैयद अमीर अली मीर ने मध्यप्रदेश के तत्कालीन प्रसिद्ध कवि जगन्नाथ प्रसाद 'भानु' से प्रेरणा ग्रहण कर और भानुरचित पिंगल ग्रंथों से छन्द ज्ञान प्राप्त कर कवितायें लिखना शुरू किया, उनका उत्साह वीर रस के उस समय के प्रसिद्ध कवि कामता प्रसाद गुरु ने बढ़ाया। विनय मोहन जी लिखते हैं 'मीर जी स्वदेशी और वंदेमातरम के प्रचारक थे। स्वदेशी वस्त्रों और स्वदेशी निर्मित शक्कर का प्रचार करते थे तथा विदेशी चीजों के बहिष्कार पर बल देते थे। कवि मीर की देशभक्ति और भगवत भक्ति की आचार्य विनय मोहन शर्मा ने सोदाहरण चर्चा की है। दुर्घटना में मीर साहब की मृत्यु होने का बाद उनकी पत्नी हैदराबाद में नवाब खानदान में से किसी एक यहां जूठे बर्तन मांजकर अपना उदर पोषण करती रही इसका बहुत ही मार्मिक वर्णन आचार्य जी ने किया है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल को ड्राईंग मास्टरी से छुड़ाकर 'हिंदी शब्द सागर' नामक प्रसिद्ध कोश के सम्पादन में सहयोग के लिये काशी बुलाने वाले बाबू श्याम सुंदर दास के सदगुणों का स्मरण भी आचार्य जी इस संकलन में किया है, जिससे पता चलता है कि 'नागरी प्रचारिणी सभा' के संस्थापक बाबू श्याम सुंदरदास ही थे। ग्रियर्सन, श्रीधर और के आदि प्रसिद्ध भारतविदों से बाबू साहब का आत्मीय सम्पर्क था। 'सरस्वती' के प्रारम्भिक दिनों में वे उसके सम्पादक भी थे और हिंदी साहित्य सम्मेलन के सभापति भी। आचार्य जी यह भी बताते हैं कि बाबू साहब प्लेनचिट में आत्माओं का आवाह भी करते थे और बताते थे कि 'तुलसीदास की आत्मा काशी हिंदू विश्वविद्यालय के आस-पास नगवा क्षेत्र में मंडराया करती है।'

'कामता प्रसाद गुरु' के गुरु रूप की आचार्य जी ने भावमय झलक दी है, साथ ही कवि श्री लोचन प्रसाद पांडेय पर भी आचार्य जी ने मार्मिक और प्रभावपूर्ण संस्मरण लिखा है। इसके अलावा राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त और जयशंकर प्रसाद पर भी आचार्य जी ने उनकी कृतियों के आधार पर संस्मरणात्मक रेखाचित्र लिखे हैं। इस क्रम में 'एक भारतीय आत्म' माखन लाल चतुर्वेदी पर लिखे संस्मरणात्मक रेखाचित्र में लेखक की निजी अनुभूतियां मुझ होकर सामने आयी हैं। यही इस सत्य का भी उद्घाटन मिलता है कि आचार्य जी (लेखक) का वास्तविक नाम शुक्ल प्रसाद तिवारी था, जिसे 'कर्मवीर' के सम्पादक माखनलाल चतुर्वेदी जी ने ही बदलवाकर विनय मोहन शर्मा कर दिया क्योंकि उन दिनों शुक्ल प्रसाद तिवारी नाम के एक अन्य सज्जन आचार्य जी के आलोचनात्मक लेखों को जना बताने का दावा करते फिर रहे थे। इसके अलावा इस संग्रह में हमें सिद्धनाथ माधव आगरकर, आचार्य शिवपूजन सहज, पंडित ऋषिकेश शर्मा, निराला, बाल कृष्ण शर्मा 'नवीन', उदय शंकर भट्ट तथा बलदेव प्रसाद मिश्र पर भी उनके

संस्मरणात्मक लेख लिखे हैं, जिनमें सिद्धनाथ माधव आगरकर पर लिखा गया संस्मरणात्मक लेख सबसे बड़ा है, निराला पर लिखा गया लेख एक सरसरी टिप्पणी जैसा ही है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि 'वे दिन वे लोग' में आचार्य विनय मोहन शर्मा ने अपने जीवन में आये उन तमाम व्यक्तियों को याद किया है जिनका उनपर सकारात्मक रूप से प्रभाव पड़ा।

3. अतीत की स्मृतियाँ : 'अतीत की स्मृतियाँ' का प्रकाशन वर्ष 1981 में साहित्य संस्थान भोपाल द्वारा किया गया था। इस संग्रह में कुल 29 संस्मरण हैं, जिनमें लेखक ने अपने आत्मीय जनों तथा प्रसिद्ध साहित्यकारों से जुड़ी अपनी आत्मीय स्मृतियों की चर्चा की है।

संग्रह में साहित्यकार और हिंदी प्रेमी ये दो वर्ग लिये गये हैं, हिंदी प्रेमी वर्ग में सबसे पहला संस्मरण पंडित मदन मोहन मालवीय जी पर हैं। 1924 में जब विनय मोहन जी अध्ययन हेतु काशी हिंदू विश्वविद्यालय गये तब सभा भवन में प्रारम्भिक भाषण पंडित मदन मोहन मालवीय जी का ही हुआ था, उनके दर्शन मात्र से ही छात्र विनय मोहन शर्मा के अंतःकरण पर जो प्रभाव पड़ा उसका सम्यक वर्णन स्वयं लेखक ने किया है। विनय मोहन जी याद करते हैं कि उन दिनों काशी हिंदू विश्वविद्यालय किस प्रकार क्रांतिकारी गतिविधियों का केंद्र बना हुआ था। इसी लेख में लेखक मालवीय जी की जीवन दृष्टि को भी रेखांकित करते हैं और बताते हैं कि मालवीय जी का विश्वास था कि धर्म के आधार पर ही जीवन में संतुलन स्थापित किया जा सकता है। इसलिये उन्होंने विश्वविद्यालय में ही धर्म की शिक्षा का प्रबंध भी किया और इसके लिये धर्म गुरुओं की नियुक्ति भी की। यह संस्मरण मालवीय जी के व्यक्तित्व, विचारों और कार्यों को संक्षेप में बहुत प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत करता है।

काशी हिंदू विश्वविद्यालय में अपने सहपाठी रहे भुवनेश्वर मिश्र माधव को भी आचार्य जी याद करते हैं, और बताते हैं कि वो दोनों किस प्रकार श्री अरविंद और महर्षि रमण के आश्रम आया - जाया करते थे। छात्र जीवन के बाद जिन लोगों के घनिष्ठ सम्पर्क में आकर विनय मोहन 1928 - 1930 के बीच प्रभावित हुए उनमें से तीन का पर भी इसी संग्रह में लिखा गया है, वे तीन साथी हैं- भगवती प्रसाद वाजपेयी, सूर्यनारायण व्यास और शिवसेवक तिवारी। इनमें वाजपेयी जी और व्यास जी तो प्रसिद्ध साहित्यकार हैं ही परंतु शिव सेवक तिवारी हिंदी प्रेमी सज्जन थे, जिन्होंने गांधी जी के असहयोग आंदोलन और स्वाधीनता संग्राम में भाग लिया था। मध्यभारत हिंदी साहित्य समिति की पत्रिका 'वीणा' के प्रकाशन में तिवारी जी का प्रमुख हाथ था।

सागर से भोपाल जाकर बसे प्रसिद्ध कहानीकार जहूर बख्श से जुड़े संस्मरण में लेखक बताते हैं कि 'जहूर बख्श सच्चे अर्थों में राष्ट्रीयता के पोषक थे।' जहूर बख्श की हिंदी सेवा के बावजूद वर्तमान हिंदी जगत द्वारा जहूर बख्श की उपेक्षा का अत्यंत मार्मिक चित्रण विनय मोहन जी ने किया है।

पंडित रविशंकर शुक्ल से विनय मोहन शर्मा जी का लगभग 45 वर्षों का संबंध रहा, उन पर ही एक आत्मीयता पूर्ण विस्तृत संस्मरणात्मक लेख संग्रह में शामिल है। इनके अलावा इस संग्रह में रामधारी सिंह दिनकर, माधवराव सप्रे, श्रीराम शर्मा, बाल गण राव, भवानी प्रसाद तिवारी, चंद्रहासन बेनिपुरी, ललिता प्रसाद शुक्ल, वंशीधर विद्यालंकार पर भी संक्षिप्त लेख हैं। संग्रह के परिशिष्ट में लेखक को अन्य साहित्यिक मित्रों द्वारा लिखे गये तेरह पत्र

शामिल हैं जिनमें से सात श्री हजारी प्रसाद द्विवेदी के हैं, तथा अन्य पत्र परशुराम चतुर्वेदी, धीरेंद्र वर्मा, राजानुजित श्रीवास्तव 'मूंट' वाचस्पति पाठक और अनिल कुमार के हैं।

इस प्रकार 'अतीत की स्मृतियाँ' जैसा की नाम से ही स्पष्ट है, आचार्य जी ने अपने आत्मीय जनों को समकालीन साहित्यकार मित्रों से जुड़ी स्मृतियों को अत्यंत प्रभावी ढंग से व्यक्त किया है। इस संग्रह के कई लेखों में हमें छायावादी लेखिका महादेवी वर्मा की शैली की झलक देखने को मिलती है।

अपने संस्मरण और रेखाचित्रों के माध्यम से साहित्य जगत, पाठक तथा समाज को कई दृष्टियों से प्रभावित करने वाले आचार्य विनय मोहन शर्मा अपनी विशिष्ट शैली एवं सामान्यीकृत विषयों के कारण काफी लोकप्रिय हुए। अपने लेखन द्वारा विनय मोहन जी ने साहित्यिक नैतिक मूल्यों, सदाचरण, सहृदयता, कर्तव्यनिष्ठा जैसे आदर्शों की स्थापना की है जो साहित्य के सामाजिक पक्ष की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। अपने रेखाचित्रों का विषय आम आदमी के बनावट उनका प्रभावपूर्ण वर्णन करके जहां आचार्य जी ने साहित्य में यथार्थ का वर्णन किया है वहीं उन्होंने समाज की अच्छाइयों और बुराइयों का भी समानुपात में चित्रण किया है। उनकी यथार्थ दृष्टि एक आदर्श स्थापित करती है कि यथार्थ के नाम पर महज फूहड़ता, अश्लीलता, अनैतिकता, असामाजिकता को प्रस्तुत करना ही साहित्यकार का कर्तव्य नहीं है, वरन साहित्यकार को तो निष्पक्ष दृष्टि से समाज के प्रत्येक पहलू को देखना चाहिये, प्रस्तुत करना चाहिये निश्चित तौर पर आचार्य विनय मोहन शर्मा का सर्जनात्मक लेखन सराहनीय है, अपनी कलम के माध्यम से लेखक ने समाज के, जीवन के कई मार्मिक, मनोहारी पहलुओं को सजीवता के साथ उकेरा है। उनके संस्मरण और रेखाचित्र आधुनिक हिंदी साहित्य की अनमोल निधि हैं।

संदर्भ:

1. आचार्य विनय मोहन शर्मा-रेखा और रंग-अक्षरा प्रकाशन, दिल्ली-1954
2. आचार्य विनय मोहन शर्मा-वे दिन वे लोग-म.प्र.साहित्य सम्मेलन-1980
3. आचार्य विनय मोहन शर्मा-अतीत की स्मृतियाँ-साहित्य संस्थान, भोपाल-1981
4. डॉ. नगेंद्र- हिंदी साहित्य का इतिहास-नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली - 1989
5. अनीता पांडेय-हिंदी रेखाचित्र सिद्धांत और सृजन -वाणी प्रकाशन, दिल्ली - 1978

